प्रौढ़ शिक्षा पर दृष्टिपात

डा. शोभना त्रिपाठी
प्रवक्ता, एम.एड.
ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेंट
साइन्स एण्ड टैक्नोलॉजी,
बरेली (उत्तर प्रदेश)

भारत देश सदैव अपनी ज्ञान तथा शिक्षा के लिए जाना जाता रहा है, यदि प्राचीन शिक्षा की बात करें तो वास्तव में हमारे देश का कोई सानी नहीं है। परन्तु धीरे–धीरे स्थिति बदलती गयी। हमारी जागरूकता की कमी के कारण विश्व में सर्वाधिक अशिक्षित प्रौढ़ भारत में ही है यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है। हमारे देश में ज्ञान की धाराएँ बहीं। एक से एक ऋषि मुनियों ने यहाँ ज्ञान प्राप्त किया उसी देश में अशिक्षित प्रौढ़–सर्वाधिक होना एक विडम्बना ही है।

यद्यपि समय–समय पर कई आयोग कोठारी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि प्रौढ़ों की शिक्षा पर विचार करते रहे हैं। अनेक पंचवर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ों के लिये शिक्षा की व्यवस्था की गयी। इस समय भारत में प्रौढ़ शिक्षा अपने विकास के उच्च स्तर को प्राप्त कर रही है। प्रौढ़ों को साक्षर बनाने के लिए अनेक योजनाएँ बनायी जा रही हैं यहाँ तक प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर बारहवीं पंचवर्षीय योजना में भी प्रौढ़ों के लिये बड़ी संख्या में धनराशि रखी गयी है।

प्रौढ़ शिक्षा से अर्थ लगाया जाता है एक विशेष आयु के बाद की शिक्षा। प्रौढ़ शिक्षा का प्रारमभ इसाई मिशनरियों से हुआ।[1] उस समय निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर बनाना ही इसका एकमात्र उद्देश्य था। परन्तु समय के साथ ही इसका रूप बदल गया। स्वतन्त्रता के समय नागरिकता की शिक्षा, स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी और कृषि की जानकारी सम्मिलित हो गयी। ईसाई मिशनरियों ने मद्रास प्रान्त में हरिजनों के लिये कतिपय रात्रि विद्यालयों की स्थापना की। कुछ समय बाद किसान भी उसमें शिक्षा पाने लगे।[2] इसे बाद में समाज शिक्षा कहा जाने लगा।

कोठारी आयोग (1964–66) ने सर्वप्रथम प्रौढ़ शिक्षा शब्द युग्म का प्रयोग किया। इसमें कार्यपरक साक्षरता का प्रयोग किया गया जिसमें जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की भी बात थी। 2 अक्टूबर 1978 को केन्द्र सरकार ने 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' की घोषणा की जिसका तात्पर्य 15–35 वर्ष की आयु के उन व्यक्तियों को शिक्षित बनाना था, जो औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके हैं।1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी 15–35 वर्ष के वे सब प्रौढ़ जो प्राथमिक शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाये हैं या जिन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ में ही छोड़ दी है, उनको साक्षर बनाना, उनको व्यावसायिक शिक्षा से परिचित कराना प्रमुख है।

ikS< f'k{kk d mnns';

भारत में तो प्रौढ़ शिक्षा एकमात्र उद्देश्य लेकर आयी वह था प्रौढ़ जनता को पढ़ना–लिखना सिखाया जाये। परन्तु 1939 में प्रौढ़ शिक्षा समिति का गठन डा. सैयद महमूद ने किया जिसमें साक्षर करना तो आवश्यक माना गया साथ ही जीवनोपयोगी ज्ञान, अच्छे नागरिक बनने की भी शिक्षा दी गयी।[3] 1978 को राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की घोषणा में साक्षरता प्रसार, स्वास्थ्य की जानकारी, प्रौढ़ों के व्यवसाय की जानकारी एवं स्वस्थ्य मनोरंजन की जानकारी देने को प्रमुख उद्देश्य बताया गया।

Hkkjr e ikS< f'k{kk dh vko';drk

शिक्षा मनुष्य का विकास करती है। यह मनुष्य तथा पशु में अन्तर बताती है। यह मनुष्य को मनुष्य बनाती है। अशिक्षित व्यक्ति किसी देश, समाज या राष्ट्र को कुछ नहीं दे सकता और न ही अपना विकास कर सकता। जब व्यक्ति आधारभूत शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते हैं तो अशिक्षित प्रौढ़ कहे जाते हैं। अशिक्षित प्रौढ़ों को शिक्षित प्रौढ़ बनाकर राष्ट्र का विकास किया जा सकता है।[4] इसके लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक है–

1- fuj{kjrk lekIr djuk – अनेक सर्वे बताते हैं कि जितने निरक्षर व्यक्ति हमारे देश में हैं उतने पूरे विश्व में कहीं नहीं है इसका कारण है वृहद जनसंख्या और सीमित साधन। अशिक्षित प्रौढ़ों का हर स्थान पर शोषण होता है। गाँधी जी ने तो निरक्षरता को सबसे बड़ा अभिशाप कहा है। इसलिए भारत में प्रौढ़ शिक्षा की अनिवार्यता स्वयंसिद्ध है।
2- LokLF; dh j{kk djuk & अशिक्षित व्यक्ति स्वास्थ्य की रक्षा सम्बन्धी नियमों को नहीं जानते हैं। वे रोगों से पूरी तरह परिचित नहीं रहते हैं। उन्हें रोगों से बचाव करना नहीं पता होता है। उन्हें शिक्षित करके रोगों की जानकारी दी जा सकती है।
3- lekt e lEeku ikIr djuk & शिक्षा सामाजिक परिवर्तन तथा व्यक्ति के विकास का बहुत बड़ा स्रोत है। शिक्षा की सहायता से रूढ़िवादी विचारधाराओं, परम्पराओं तथा अंधविश्वासों को दूर किया जा सकता है। हमारे समाज में आज भी कुप्राथाएँ प्रचलित हैं इसका कारण है कि जो अशिक्षित प्रौढ़ इसे बदलना नहीं चाहते इसलिए शिक्षित करके प्रौढ़ों को जागरूक बनाया जा सकता है।
4- vkfFkd fodkl djuk & शिक्षा के द्वारा प्रौढ़ों को व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। उन्हें उनकी रूचि का व्यवसाय सिखाया जा सकता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधर सके। नगरों में व्यावसायिक एवं प्राविधिक शिक्षा की तथा ग्रामों में कृषि एवं कुटीर उद्योग धंधों की व्यवस्था की जानी चाहिए और इस क्षेत्र में निरन्तर काम भी किया जा रहा है।
5- ykdrU= d fy, f'k{kk &शिक्षा लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी है। लोकतंत्र तभी सफल होता है जब समस्त जन जिनमें प्रौढ़ भी शामिल हैं, शिक्षित होते हैं। भारत में ज्यादातर प्रौढ़ों के अशिक्षित होने के कारण वे अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को पूरी तरह नहीं समझ पाते इसलिए भारत में प्रौढ़ों को शिक्षित करना बहुत ही जरूरी है।
6- jk"Vª d eq[; y{; ikIr djuk& jk"Vªh; y{; tkus & जनसंख्या नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता की जानकारी शिक्षित होने पर ही होती है। जहां शिक्षित व्यक्ति धार्मिक संकीर्णता से दूर होते हैं वहीं पर्यावरण के प्रति भी उनमें उपेक्षाकृत ज्यादा जागरूकता होती है।
7- jk"Vª dk fodkl djuk& अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा शिक्षित व्यक्ति की कार्य कुशलता अधिक होती है। इसलिए भारत में प्रौढ़ों को शिक्षा देकर उनकी कार्यकुशलता में वृद्धि किया जाना जरूरी है ताकि राष्ट्र की समस्याओं को जान सकें।

 Vol. 5, Issue: 10, October : 2017
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

8- Lor= Hkkjr e: ik< vFkok lekt f'k{kk dk fodkl& स्वतंत्रता के बाद केन्द्र सरकार ने प्रौढ शिक्षा के बारे में विचार किया जिसे समाजशिक्षा कहा गया। 1949 में इलाहाबाद में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड' का 15वाँ अधिवेशन हुआ जिसमें अध्यक्षता कर रहे केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रौढ़ शिक्षा के स्थान पर समाज शिक्षा का प्रयोग किया। समाज शिक्षा का तात्पर्य प्रौढ़ शिक्षा से लगाया जाता है। इसका तात्पर्य है समाज के हर व्यक्ति के पास शिक्षा पहुँचाई जाये चाहे उसकी कुछ भी आयु हो। 1949 में यूनेस्को (यूनेस्को) के सहयोग से शिक्षा पर एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके तहत ग्रामीण प्रौढ़ों के लिये ग्रमीण क्षेत्रों में 'जनता कालेज' बनाये गये। उत्तर प्रदेश में शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों प्रौढ़ शिक्षा प्रसार में लगे थे। इसका प्रसार भजन, लोकगीत से किया गया।

इसका प्रसार इतना हुआ कि 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना में 30% लोगों को साक्षर बनाने पर बल दिया गया। परन्तु बहुत प्रयास के बाद भी 20% लक्ष्य ही प्राप्त हो पाया। पहली पंचवर्षीय योजना में समाज शिक्षा के लिए 76 करोड़ रूपये का प्रावधान था।

जब द्वितीय पंचवर्षीय योजना लागू हुई तो इस क्षेत्र में अनेक शोध हुए, अनेक सूचनाऐं इकट्ठी की गयीं राज्यों के प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं में प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित जो भी कार्यक्रम हो सके उनका विस्तार थोड़ा बहुत होता रहा तथा इसके लिये बचत का भी निर्धारण किया गया। मूलतः किसान तथा महिलाऍ सर्वाधिक निरक्षर थे क्योंकि गॉवों में विद्यालय न होने के कारण तथा खेती में लगे होने के कारण ऐसा हुआ। रूढ़िवादी विचारधारा के कारण महिलाऍ अशिक्षित रह गयीं। दूरदर्शन पर 1960 में कृषि कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। महिलाओं की समस्याओं के समापन के लिये केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद की स्थापना की गयी। इतनी व्यवस्था के बाद भी इसकी प्रगति 1961 में 24% ही पहुॅच पायी।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में इसे सफल बनाने के लिये कुछ कालेज और खोले गये। चूंकि हमारे देश के सभी प्रान्तों में प्रौढ़ जनता अशिक्षित थी। अतः विभिन्न भाषाओं में प्रौढ़ों के लिये पुस्तकों का लेखन किया गया। 'ज्ञान सरोवर' नाम से प्रौढ़ों के लिये एक विश्वकोष भी प्रकाशित किया गया। प्रौढ़ों को शिक्षित करने के लिये अनेक कार्यक्रम बनाये गये जिसमें शिक्षक तथा विद्याथियों ने बिना धन लिये सहयोग दिया।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में समाज शिक्षा को पुनः प्रौढ़ शिक्षा का नाम दिया गया। इस समय कार्यपरक योग्यता पर बल दिया गया जिसमें पढ़ने–लिखने के साथ व्यावहारिक ज्ञान अनिवार्य कर दिया गया। 1969 में तो 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा परिषद' बनायी गयी जिसने प्रौढ़ शिक्षा कि लिए कार्यक्रम बनाया, नीतियाँ बनायीं, उनका समय–समय पर मूल्यांकन आवश्यक बताया। चूँकि प्रौढ़ अधिकंशतः गावों में थे, किसान थे, खेती करते थे और खेती में अनेक दवाओं के छिड़काव तथा फसल की जानकारी की आवश्यकता थी इसलिए उन्हें वैज्ञानिक जानकारी दी गयी तथा उत्पादन बढ़ाने के तरीके भी बताये गये। इस योजना में नये कालेज खोलने के लिए, पुस्तकालय खोलने के लिए, तथा प्रौढ़ शिक्षा की अन्य आवश्यकताओं के लिए 64 करोड़ रूपये की स्वीकृति दी गयी थी।

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में प्रौढ़ शिक्षा के लिये 35 करोड़ रूपये की धनराशि रखी गयी। इस योजना में 15 से 25 आयु वर्ग के निरक्षर प्रौढ़ों के लिये अनौपचारिक शिक्षा तथा उससे अधिक आयु के निरक्षर प्रौढों के लिये प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों पर बल दिया गया। प्रौढ़ों के लिए 'आकाश के

शिक्षक' (Teacher in the Sky) का प्रयोग हुआ। मई 1974 में अमेरिका ने एक शैक्षिक उपग्रह आकाश में स्थापित किया उसे आकाश में शिक्षक की संज्ञा दी गई। इस कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य, परिवार नियोजन तथा कृषि सम्बन्धी जानकारी दी गयी।

छठी पंचवर्षीय योजना में सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा को द्वितीय वरीयता दी। गाँधी जी के जन्मदिन के 2 अक्टूबर 1978 को 'राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम' का शुभारम्भ किया गया। प्रौढ़ों को सामाजिक चेतना उत्पन्न करने की प्रेरणा दी गयी। 15–35 आयुवर्ग के निरक्षर प्रौढ़ों के लिये निरौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करने को प्राथमिकता दी गई। उनके लिये जनसंचार के साधनों के प्रयोग पर बल दिया गया। इस योजना के दौरान साक्षर बनाने, सामाजिक चेतना जागृत करने और उनकी कार्यकुशलता बढ़ाने पर बल दिया गया।

सातवीं पंचवर्षीय योजना में सन् 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रौढ़ों की शिक्षा के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दु शामिल किये गये –

- प्रौढ़ शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्यों से जोड़ा जाये ताकि विशेष ध्यान दिया जाये।
- निरक्षरता हटाने के लिये शिक्षा संस्थाओं, शिक्षकों, शिक्षार्थियों, स्वैच्छिक संस्थाओं और युवा वर्ग का सहयोग लिया जायेगा।
- प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिये जनसंचार के माध्यमों का प्रयोग किया जायेगा तथा दूर शिक्षा कार्यक्रम चलाये जायेंगे।
- गावों में सतत् शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गयी। 1988 में इस मिशन की स्थापना की गयी। जिसने प्रौढ़ों के मन में अनेक तात्कालिक कार्यक्रमों के लिये जागरूकता पैदा की। प्रौढ़ शिक्षा के लिये जन साधारण कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी।
- इस योजना को अधिकतर जिलों में सक्रियता से लागू किये जाने के लिये नुक्कड़ नाटकों, समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन प्रसारणों का सहारा लिये जाने तथा सायंकालीन प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएँ चलाये जाने को बढ़ावा दिया गया।
- 1991 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना की गयी। इस संस्थान द्वारा शैक्षिक एवं तकनीकी सहयोग देने की सलाह दी गयी तथा प्रौढ़ों के लिये अनुसंधान कार्य को बढ़ावा दिया गया। इस योजना में भारत सरकार ने 360 करोड़ रूप्ये की धनराशि निर्धारित की।

इसी आठवीं पंचवर्षीय योजना, नवीं पंचवर्षीय योजना, दसवीं पंचवर्षीय योजना, ग्वारहवीं पंचवर्षीय योजना में भी प्रौढ़ों के लिये कुछ न कुछ योजनाएँ बनायी और चलायी गयीं। इस योजना का मुख्य लक्ष्य शत–प्रतिशत कार्यपरक साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये 'साक्षर भारत कार्यक्रम' चलाया जा रहा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रौढ़ों के लिये शिक्षा के कितने प्रबन्ध किये गये हैं कितनी योजनाएँ बनायी गयी हैं जो काफी हद तक सफल हो चुकी है तथा उत्तरोत्तर विकास के चरम पर है। इसका कारण यह भी है कि प्रौढ़ों में जागरूकता आने लगी है। यदि निरन्तर ऐसे ही विकास होता रहा तो हम शत–प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति में पीछे नहीं रहेंगे।

lnHkxUFk lph

1. पाठक, पी.डी., (2015). भारतीय शिक्षा तथा उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 359
2. मुखोपाध्याय, श्रीधरनाथ, भारतीय शिक्षा का इतिहास, आधुनिक काल, पृष्ठ 209
3. लाल बिहारी, रमन (2012). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ सं. 520
4. पाठक, पी.डी., (2013).भारतीय शिक्षा तथा उसकी समस्याएँ, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा पृष्ठ 36